प्रेमचंद की कहानियों में हाशिए का समाज
(PREMCHAND KI KAHANIYON MEIN HASHIYE KA SAMAJ)

एम.फिल. हिंदी उपाधि हेतु प्रस्तुत

लघु शोध-प्रबंध

सत्र- 2014-15

शोधार्थी

प्रेम कुमार

पंजीयन संख्या : 2014/02/215/009

हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग

साहित्य विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

पोस्ट – हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा - 442005 (महाराष्ट्र)

भूमिका

प्राचीन काल से ही भारत की समाज-व्यवस्था में असमानता विद्यमान रही है। आज भले ही हम कितने भी दावे कर लें कि 'भारत अनेकता में एकता का देश है' किंतु यह कथन पूर्ण सत्य को व्यक्त नहीं करता। वर्तमान समय में भी जातिवाद, धार्मिक कट्टरता और दमनकारी पितृसत्तात्मक समाज-व्यवस्था भारत की उन्नति में रुकावट बन कर खड़ी है। वैदिक काल से चली आ रही वर्ण व्यवस्था ने जाति व्यवस्था का और भी अधिक भयानक रूप धारण कर लिया है। उच्च जातियों ने निम्न जातियों पर अत्याचार कर उन्हें नारकीय जीवन जीने को विवश किया है। दमनकारी पितृसत्ता ने स्त्री को अपने पाँव की जूती समझ पग-पग पर उसके साथ छल-कपट किया। पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था ने भारतीय स्त्री को परंपरा के नाम पर अनेक बार बाल-विवाह और सती-प्रथा जैसे अमानुषिक प्रयोगों से प्रताड़ित किया। दलित स्त्रियों के संबंध में कहा जाए तो उन्होंने और भी वीभत्स और दमघोंटू वातावरण में साँसे लीं। सदियों से सवर्ण पुरुष समाज उनकी अस्मिता को विनिष्ट करते आए हैं।

ये विषमताएँ कभी सामंतवाद का रूप धारण कर किसान को अपना शिकार बनाती हैं, तो कभी पूंजीवाद का रूप ले मजदूरों और निम्नवर्गीय समाज को। खाद्यान्न उत्पन्न कर सबका पेट भरने वाला किसान एवं कठिन परिश्रम कर दूसरों को सुख-सुविधाएँ देने वाला मजदूर भूख और कर्ज के अत्यधिक बोझ से तंग होकर पिछले कुछ वर्षों से हजारों की संख्या में आत्महत्या कर रहे हैं। वर्तमान समय में धर्म मनुष्यों को जोड़ने का नहीं अपितु तोड़ने का कार्य कर रहा है। भारत में हिंदू धर्म को मानने वाले बहुसंख्यक लोग हैं जो अपनी संख्या में अधिक होने का लाभ उठाकर अल्पसंख्यकों पर अत्याचार कर रहे हैं। भारत में मुख्य रूप से मुस्लिम साम्प्रदायिकता के शिकार हो रहे हैं। भारत धर्म निरपेक्ष देश है जिसमें सभी को

स्वतंत्रता से रहने का अधिकार है किन्तु फिर भी मुस्लिमों के साथ बर्बरता का व्यवहार किया जा रहा है, आए दिन होने वाले दंगों में उनकी हत्या की घटना सामान्य सी हो चली है। भारत में स्त्री, दलित, आदिवासी, किसान, मजदूर और मुस्लिम सम्प्रदाय हाशिए का जीवन जीने को विवश हैं। इन्हें 'हाशिए का समाज' कहते हैं। इन परिस्थितियों में प्रश्न उठता है कि क्या भारत के लोग एकता और अखंडता के सूत्र में बंधे हैं?,क्या भारत के सभी नागरिक भाईचारे और मैत्रीपूर्ण ढंग से रहते हैं? साहित्य ऐसे ही प्रश्नों के उत्तर खोज कर समाज को संतुलित करने का प्रयास करता है जिससे समाज में विषमताएँ ख़त्म हों और समाज में एकरूपता आ सके।

मानवीय संबंधों में आये परिवर्तन और समाज के विघटन को हिंदी के कथाकर मुंशी प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में रेखांकित किया। प्रेमचंद की कहानियाँ स्त्री, दलित, किसान और मुस्लिमों को समान मानव अधिकार देने की वकालत करती हैं, जिससे भारत एक सुख-समृद्ध राष्ट्र बन सके।

इन्हीं साहित्यिक गुणों के कारण प्रेमचंद कथा सम्राट और विश्व के महान साहित्यकार समझे जाते हैं, किंतु उनके निधन के 65-70 वर्षों के पश्चात कुछ दलित विचारकों-चिंतकों ने उन पर दलित विरोधी, स्त्री विरोधी होने के आरोप लगाए हैं। क्या प्रेमचंद वास्तव में दलित और स्त्री विरोधी थे? यह प्रश्न मेरे मस्तिष्क में बार-बार कौंधता रहा। यही कारण है कि मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध का विषय **'प्रेमचंद की कहानियों में हाशिए का समाज'** का चयन किया। प्रेमचंद की कहानियों में से स्त्री जीवन, दलित जीवन और किसान जीवन और उनकी अनेक रूपी समस्याओं को चित्रित करने वाली प्रमुख कहानियों को मैंने अपने लघुशोध-प्रबंध का आधार बनाया है। इन कहानियों के माध्यम से मैंने हाशिए

के समाज के प्रति प्रेमचंद की वैचारिकी और वर्तमान समाज में उठे समसामयिक विमर्शों के आलोक में उनकी प्रासंगिकता को बताने का प्रयास किया है।

अपनी सुविधानुसार इस विषय को चार अध्यायों में विभक्त करते हुए, प्रथम अध्याय- **'प्रेमचंद की कहानियों में हाशिए का समाज'** के अंतर्गत साहित्य और हाशिए के समाज को स्पष्ट किया गया है, साथ ही प्रेमचंद की कहानियों में स्त्री, दलित और किसान पात्रों के संघर्ष, विद्रोह और आशा-आकाक्षाओं के साथ-साथ वर्तमान समय में उनकी स्थिति को भी दिखाने का प्रयास किया गया है। द्वितीय अध्याय **'प्रेमचंद की कहानियों पर तत्कालीन दलित आंदोलनों का प्रभाव'** में महात्मा गांधी के अछूतोद्धार आंदोलन और डॉ॰ भीमराव अंबेडकर के दलित आंदोलनों का प्रेमचंद के विचारों और उनकी कहानियों पर पड़े प्रभाव को दिखाया गया है।

वर्तमान समय में साहित्य में उठे दलित और स्त्री विमर्श केवल प्रेमचंद की कहानियों को ही नहीं, अपितु संपूर्ण भारतीय साहित्य को पुनर्व्याख्यायित करने की मांग कर रहे हैं। अत: तृतीय अध्याय **'प्रेमचंद कहानियाँ और समसामायिक विमर्श'** में प्रेमचंद की दलित और स्त्री जीवन की कहानियों को दलित विमर्श और स्त्री विमर्श के आलोक में व्याख्यायित कर, दलित साहित्यकारों की दृष्टि से विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है।

चतुर्थ अध्याय **'प्रेमचंद की कहानियों का शिल्प विधान'** के अंतर्गत प्रेमचंद का हिंदी कहानी में अवदान को दिखाते हुए उनकी कहानियों की भाषा और हिंदी कहानी के लिए प्रेमचंद की भाषा विषयक मान्यताओं को स्पष्ट किया गया है, साथ ही प्रेमचंद की दलित संबंधी कहानियों की जाँच-पड़ताल करते हुए, उनका हिंदी दलित कहानी शिल्प से समानता, असमानता तथा हिंदी दलित कहानी के शिल्प में उसके योगदान को दिखाया गया है।

अंत में प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का निष्कर्ष रूप में **'उपसंहार'** प्रस्तुत किया गया है, और शोध लेखन में जिन पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं की सहायता ली गई है, उनका विवरण संदर्भ सूची में दिया गया है।

किसी भी कार्य को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को किसी न किसी के सहयोग की आवश्यकता होती है। उनके सहयोग के बिना कार्य संभव नहीं हो पाता। अत: सर्वप्रथम मैं अपने शोध निर्देशक आदरणीय गुरुवर वरिष्ठ प्रोफेसर, साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता और पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो॰ कृष्ण कुमार सिंह का आभारी हूँ, जिन्होंने अपनी अति व्यस्त दिनचर्या में से समय निकालते हुए समय-समय पर मेरा उचित मार्गदर्शन किया और मुझ पर बिना किसी दबाव के स्वतंत्र रूप से कार्य करने की आजादी दी। मैं अपने विभागाध्यक्ष एवं प्रख्यात मार्क्सवादी कथा आलोचक प्रो॰ सूरज पालीवाल जी का भी आभारी हूँ जिन्होंने समय-समय पर सभी शोधार्थियों को उचित सुझाव और सुविधाएँ प्रदान कीं, साथ ही विभाग के समस्त गुरुजनों, कर्मचारियों का भी आभारी हूँ जिन्होंने शोध जैसे जटिल कार्य को करने के लिए उचित वातावरण प्रदान किया।

मैं अपनी माता श्रीमती रामदेवी और पिता श्री सोनपाल सिंह का आभारी हूँ जिन्होंने खुद अभावपूर्ण जीवन जीते हुए भी मुझे विद्यार्जन करने की प्रेरणा दी। मैं अपने बड़े भाईयों जितेन्द्र, सतेन्द्र,और रविन्द्र का भी आभारी हूँ जिन्होंने मुझे कठिन परिस्थितियों से लड़ना सिखाया।

लघु शोध-प्रबंध के लेखन के क्रम में कई बार अनेक जटिल प्रश्न उपस्थित हुए, जिनका जवाब ढूँढने में मस्तिष्क खिन्नता और क्रोध से भर उठा। अत: मेरी इन खिन्नताओं और क्रोध को विनम्रतापूर्वक शांतकर शोध लेखन के लिए पुन: प्रेरित करने वाली मित्र पूनम

कुमारी का भी मैं हृदय से आभारी हूँ। मैं अपने प्रदीप, अवतार, लोकेश, मुकेश, विनय, बंसराज, अफसर हुसैन खान,जयप्रकश,देविदास,शिंदे संतोष,सुरेश डूडवे, एवं उन सभी मित्रों का भी आभारी हूँ जिन्होंने मुझे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से शोध संबंधित प्रश्नों पर विचार विमर्श कर लिखने की प्रेरणा दी।

विषयानुक्रमणिका

पृ० सं०

भूमिका i-v

प्रथम अध्याय : प्रेमचंद की कहानियों में हाशिए का समाज 01-46

1.1 प्रेमचंद का जीवन परिचय
1.2 साहित्य और हाशिए का समाज
1.3 प्रेमचंद की कहानियों में दलित
1.4 प्रेमचंद की कहानियों में स्त्री
1.5 प्रेमचंद की कहानियों में किसान

द्वितीय अध्याय: प्रेमचंद की कहानियों पर तत्कालीन दलित आंदोलनों का प्रभाव 47-61

2.1 महात्मा गांधी का अछूतोद्धार आंदोलन और प्रेमचंद
2.2 प्रेमचंद की कहानियों पर डॉ० भीमराव अंबेडकर के आंदोलनों का प्रभाव

तृतीय अध्याय : प्रेमचंद की कहानियाँ और समसामयिक विमर्श 62-90

3.1 प्रेमचंद की कहानियाँ और दलित विमर्श
3.2 प्रेमचंद की कहानियाँ : दलित साहित्यकारों की दृष्टि में
3.3 प्रेमचंद की कहानियाँ और स्त्री विमर्श

चतुर्थ अध्याय: प्रेमचंद की कहानियों का शिल्प-विधान 91-111

4.1 हिंदी कहानी में प्रेमचंद का अवदान
4.2 प्रेमचंद की कहानियों की भाषा
4.3 प्रेमचंद की दलित संबंधी कहानियों का शिल्प: हिंदी दलित कहानी शिल्प

उपसंहार 112-114

संदर्भ ग्रंथ-सूची 115-119

उपसंहार

प्रेमचंद के समय में भारत अनेक आंदोलनों और सामाजिक, राजनैतिक उथल-पुथल से गुजर रहा था। स्वतंत्रता आंदोलन सदियों से अंग्रेज सरकार की दासता सह रहे भारतवासियों की मुक्ति के लिए था। यह दासता तो विदेशियों द्वारा मिली थी, किंतु तत्कालीन भारत में भारतीयों द्वारा ही भारतीय लोग दास जीवन जीने को विवश थे। यह दास थे- जाति व्यवस्था में अस्पृश्य समझे जाने वाले-'अछूत'। जो बाद में दलित कहे गए और विश्व की आधी आबादी कही जाने वाली- 'स्त्री'। मनुवादी समाज व्यवस्था में दलित शताब्दियों से जाति दंश झेल रहे हैं तो स्त्री पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था के अत्याचार।

ईस्ट इंडिया कंपनी की स्वार्थपूर्ण नीति के कारण भारत के कुटीर उद्योग चौपट हो गए और सारा दबाव कृषि पर आ पड़ा। कृषि पर निरंतर बढ़ते बोझ और अंग्रेजों के द्वारा लागू की जा रही नई-नई कृषि व्यवस्था ने कृषि की रीढ़ तोड़ दी। अंग्रेजी सरकार और किसानों के मध्य अनेक शोषणकर्ता कतार बनाकर खड़े हो गये। किसान भूखों मरने लगे।

तत्कालीन भारतीय परिवेश में मुसलमान भी साम्प्रदायिकता की मार झेल रहे थे। भारतीय मुसलमानों ने स्वतंत्रता आंदोलन में बराबर की भूमिका निभाई, किन्तु साथ ही अपने भारतीय भाइयों अर्थात हिंदुओं की गुलामी से मुक्त होने के लिए पृथक मुस्लिम राष्ट्र की भी शर्त रख दी, परिणाम स्वरूप स्वतन्त्रता पश्चात भारत का दो खंडों में विभाजन हुआ और पाकिस्तान एक मुस्लिम राष्ट्र के रूप में अस्तित्व में आया।

अत: प्रेमचंदयुगीन भारत में भारतवासियों को केवल विदेशियों की ही गुलामी की मार न झेलनी पड़ रही थी, बल्कि वे अपने ही देश के भारतीयों की भी दासता झेल रहे थे। शोषण का स्वरुप भले कोई हो निश्चित है कि शोषित समाज एक न एक दिन विद्रोह तो अवश्य करेगा ही और विद्रोह हुए। प्रेमचंद के रचनाकाल में स्वाधीनता आंदोलन, नवजागरण,

गांधी जी के नेतृत्व में अछूतोद्धार आंदोलन, डॉ॰ भीमराव अंबेडकर के दलित आंदोलन और स्त्री आंदोलन अपने चरम पर थे। यह युग सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक आंदोलनों के घमासान से परिपूर्ण रहा। हा-हाकार की इस स्थिति में समाज को संतुलित बनाए रखने के साथ-साथ शोषितों में जागरुकता और उनके अधिकारों का पक्ष रखने का दम केवल प्रेमचंद में ही था। प्रेमचंद की कहानियाँ उनके उपन्यासों से कम महत्व नहीं रखतीं। उनकी कहानियों में तत्कालीन भारतीय समाज की यथार्थपरक तस्वीर देखने को मिलती है। प्रेमचंद ने अपनी कहानियों के माध्यम से दलित, स्त्री, किसान, मजदूर और मुसलमानों की समस्याओं को साहित्यिक मंच प्रदान किया। उनकी आरंभिक और मध्यवर्ती कहानियों पर महात्मा गांधी जी और उनके अछूतोद्धार आंदोलन का प्रभाव स्पष्ट रूप से नजर आता है। इन कहानियों में प्रेमचंद ने समस्याओं का हल आदर्शवादी और सुधारवादी ढंग से खोजने का प्रयास किया है, किंतु उनकी परवर्ती कहानियों में गांधी जी के मूल्यों से मोहभंग और डॉ॰ भीमराव अंबेडकर के दर्शन के प्रति निकटता भी दिखाई देती है। डॉ॰ अंबेडकर के दलित आंदोलनों का प्रभाव उनकी परवर्ती कहानियों में लक्षित होता है। इन कहानियों में दलितों की सामाजिक, राजनैतिक स्थिति को अत्यंत सूक्ष्मता और गहराई से रखा गया है।

प्रेमचंद ने हिंदी कहानी का कायाकल्प कर उसे जीवन से जोड़ा। उनकी कहानियों की भाषा जन-जीवन में बोली जाने वाली सामान्य भाषा है, और उनके विचार जनता के विचार हैं।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में- "अगर आप उत्तर भारत की समस्त जनता के आचार-विचार, भाषा-भाव, रहन-सहन, आशा-आकांक्षा, दुख-सुख और सूझ-बूझ को जानना चाहते हैं तो प्रेमचंद से उत्तम परिचायक आपको नहीं मिल सकता।"[1]

प्रेमचंद की कहानियों में ही सर्वप्रथम हमें दलित विमर्श और स्त्री विमर्श के बीज देखने को मिलते हैं, किंतु विडंबना है कि कुछ राजनैतिक कार्यकर्ता और दलित विचारक साम्प्रदायिकता फ़ैलाने के उद्देश्य से उन पर दलित और स्त्री विरोधी होने का आरोप लगा रहे हैं, जिसका साहित्य-जगत में कोई स्थान नहीं है। प्रेमचंद आज भी सार्थक और प्रासंगिक बने हुए हैं।

[1] द्विवेदी, आचार्य हजारी प्रसाद. हिंदी साहित्य : उद्भव और विकास. पृ॰ 135

संदर्भ ग्रंथ सूची

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

1. प्रेमचंद. (2002). मानसरोवर. (सभी 08 भाग). नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन

2. श्रीवास्तव, जितेन्द्र. (2012). प्रेमचंद : दलित जीवन की कहानियाँ. (सं०). नई दिल्ली : भारतीय ज्ञानपीठ

सहायक ग्रंथ

1. देवी, शिवरानी. (2010). प्रेमचंद : घर में. नई दिल्ली : आत्माराम एंड संस
2. राय, अमृत. (1962). प्रेमचंद : कलम का सिपाही. इलाहाबाद : हंस प्रकाशन
3. प्रेमचंद. साहित्य का उद्देश्य. (2012). नई दिल्ली : जनवाणी प्रकाशन प्रा० लि०
4. राय, अमृत. (1962). प्रेमचंद : विविध प्रसंग. (03 भागों में). (सं०). इलाहाबाद : हंस प्रकाशन
5. प्रेमचंद. (2003). प्रेमचंद के विचार. (भाग-01). प्रकाशन संस्थान. नई दिल्ली :
6. शर्मा, डॉ० रामविलास. (2007). प्रेमचंद : आलोचनात्मक परिचय. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन
7. शर्मा, डॉ० रामविलास. (2008). प्रेमचंद और उनका युग. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन
8. वाजपेयी, नंददुलारे. (1959). प्रेमचंद : साहित्यिक विवेचन. इलाहाबाद : हिंदी भवन
9. मदान, डॉ० इंद्रनाथ. (2006). प्रेमचंद एक विवेचन. नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन
10. मंगलमूर्ति. (2005). प्रेमचंद पत्रों में. दिल्ली : अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा० लि०
11. शंभुनाथ. (1988). प्रेमचंद का पुनर्मूल्यांकन. नई दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाऊस
12. गोयनका, डॉ० कमल किशोर. (1981). प्रेमचंद अध्ययन की नयी दिशाएँ. दिल्ली : साहित्य निधि
13. रहबर, हंसराज. (2008). प्रेमचंद : जीवन, कला और कृतित्व. नई दिल्ली : साक्षी प्रकाशन

14. कांतिमोहन. (2010). प्रेमचंद और दलित विमर्श. नई दिल्ली : स्वराज प्रकाशन
15. गोपाल, मदन. (2006). कलम का मजदूर : प्रेमचंद. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन
16. यादव, राजेंद्र. (2008). प्रेमचंद की विरासत. नई दिल्ली : सामयिक प्रकाशन
17. देथा, विजयदान. (2009). प्रेमचंद की बस्ती. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन
18. प्रो॰ रामबक्ष. (2012). प्रेमचंद और भारतीय किसान. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन
19. शाही, राधेगोविंद. (2006). किसान चेतना और प्रेमचंद का साहित्य. वाराणसी : लोकायत प्रकाशन
20. रजा, जाफर. (2008). प्रेमचंद : कहानी का रहनुमा. इलाहाबाद : लोकभारतीय प्रकाशन
21. रजा, जाफर. (2010). कथाकार प्रेमचंद. इलाहाबाद : लोकभारतीय प्रकाशन
22. नवल, नन्द किशोर. (2007). प्रेमचंद का सौंदर्यशास्त्र. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन
23. सिंह, मुरली मनोहर प्रसाद/अवस्थी, रेखा. (2006). प्रेमचंद: विगत महत्ता और वर्तमान अर्थवत्ता. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन
24. मिश्र, शिवकुमार. (1992). प्रेमचंद : विरासत का सवाल. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन
25. चंद, महेश. (2006). प्रेमचंद की कहानियों में सांस्कृतिक चेतना. दिल्ली : बृजेश्वरी प्रकाशन.
26. डॉ॰ धर्मवीर. (2007). प्रेमचंद : सामन्त का मुंशी. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन
27. डॉ॰ धर्मवीर. (2010). प्रेमचंद की नीली आँखें. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन
28. वाल्मीकि, ओमप्रकाश. (2011). दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र. नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन
29. लिम्बाले, शरणकुमार. (2005). दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन
30. पाण्डेय, मैनेजर. (2015). साहित्य और दलित दृष्टि. नई दिल्ली : स्वराज प्रकाशन
31. सिंह, डॉ॰ एन॰. (2012). दलित साहित्य के प्रतिमान. दिल्ली : वाणी प्रकाशन
32. सिंह, डॉ॰ एन॰. (2009). दलित साहित्य चिंतन के विविध आयाम. गाजियाबाद : आकाश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स

33. प्रेमी, डॉ॰ पुरुषोत्तम. (2002). दलित साहित्य और सामाजिक न्याय. दिल्ली : समता प्रकाशन

34. प्रसाद, माता. (2010). भारत में दलित जागरण और उसके अग्रदूत. नई दिल्ली : सम्यक प्रकाशन

35. राजकिशोर. (2008). जाति का जहर. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन

36. चंचरीक, कन्हैयालाल. (2008). आधुनिक भारत का दलित आंदोलन. नयी दिल्ली : यूनिवर्सिटी पब्लिकेशंस

37. डॉ॰ धमवीर. (2012). डॉ॰ अंबेडकर और दलित आंदोलन. नई दिल्ली : शेष साहित्य प्रकाशन

38. चंद्र, डॉ॰ सुभाष. (2010). दलित मुक्ति आंदोलन : सीमाएँ ओर संभावनाएँ. पंचकूला : आधार प्रकाशन

39. मेनन, निवेदिता. (2001). नारीवादी राजनीति: संघर्ष एवं मुद्दे. नई दिल्ली : दिल्ली विश्वविद्यालय प्रकाशन

40. यादव, राजेंद्र. (2007). आदमी की निगाह में औरत. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन

41. अग्रवाल, रोहिणी. (2011). स्त्री लेखन : स्वप्न और संकल्प. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन

42. सुमन, डॉ॰ मंजू. (2004). दलित महिलाएं. नई दिल्ली : सम्यक प्रकाशन

43. सिंघवी, कमला. (2011). आधुनिक परिवार में स्त्री. नई दिल्ली : कल्याणी शिक्षा परिषद्

44. बाली, एल॰आर॰. (2000). क्या गांधी महात्मा थे?. जालंधर : भीम पत्रिका पब्लिकेशंस

45. बाली, एल॰आर॰. (2008). डॉ॰ अंबेडकर महान समाज सुधारक. जालंधर : भीम पत्रिका पब्लिकेशंस

46. विद्यावाचस्पति, सोहनलाल शास्त्री. (2011). हिंदू कोड बिल और डॉ॰ अंबेडकर. नई दिल्ली : सम्यक प्रकाशन

47. कृष्ण, वी॰/ सिंह, भीम (2014). आदिवासी विमर्श (सं॰). नई दिल्ली : स्वराज प्रकाशन

48. कपूर, मस्तराम. (2008). राममनोहर लोहिया रचनावली (खंड-09). नई दिल्ली : अनामिका पुब्लिकेशर्स एंड डिस्यूब्यूटेर्स. प्रा॰ लि॰

49. शर्मा, डॉ॰ रामविलास. (2008). मार्क्सवाद और प्रगतिशील साहित्य. दरियागंज. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन

50. पाण्डे, डॉ॰ मैनेजर. (2014). साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका. पंचकूला : हरियाणा ग्रंथ अकादमी

51. जैन, डॉ॰ निर्मला. (1986). साहित्य का समाजशास्त्रीय चिंतन. नई दिल्ली : दिल्ली विश्वविद्यालय प्रकाशन

52. तिवारी, डॉ॰ भोलानाथ. (2006). भाषा विज्ञान. इलाहाबाद : किताब महल

53. तिवारी, डॉ॰ रामचन्द्र. (2007). हिन्दी का गद्य साहित्य. वाराणसी : विश्वविद्यालय प्रकाशन

54. सिंह, डॉ॰ उमेश कुमार. (2014). दुख-सुख के सफर में.गाजियाबाद : साहित्य सदन

55. डॉ॰ अमरनाथ. (2009). हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन

पत्र-पत्रिकाएँ :

1. कर्दम, डॉ॰ जयप्रकाश. दलित साहित्य वार्षिकी. (अंक-2013). पश्चिम पुरी. नई दिल्ली : सम्यक प्रकाशन

2. थोरात, डॉ॰ विमल. दलित अस्मिता. (अंक जनवरी-जुलाई 2014). नई दिल्ली : इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ दलित स्टडीज

3. पाण्डे, अमित कुमार. संवाद. (नवंबर 2012-अक्टूबर 2013). वाराणसी : भारतीय भाषा एवं प्रगतिशील साहित्य विकास समिति

4. हिलसायन, सुधीर. सामाजिक न्याय संदेश. (अंक जून 2015). नई दिल्ली : डॉ॰ अंबेडकर प्रतिष्ठान

5. कोस्का, आयवन. फारवर्ड प्रेस. (अंक मई 2015). नई दिल्ली

शब्दकोश

1 वर्मा, रामचन्द्र. (1996). उर्दू-हिन्दी कोश. (सं०). वाराणसी : संजय बुक सेंटर

2 वर्मा, डॉ० धर्मेंद्र. (2010). बृहत हिन्दी शब्दकोश.(सं०). नई दिल्ली : प्रभात प्रकाशन

वेबसाइट :

हिन्दी समय डॉट कॉम www.hindisamay.com

समकालीन साहित्य डॉट कॉम www.samkalinsahity.com

साहित्यकुंज डॉट नेट www.sahitykunj.net